पिता ध्यान दे, तो बच्चे तंदुरुस्त

देखा गया है कि पीले बैबून्स में पिता का संरक्षण मिलने पर उसकी नर संतानें जल्दी परिपक्व होती हैं मगर सवाल यह है कि वे अपनी संतानों को कैसे पहचानते हैं।

ताज़ा अध्ययन बताते हैं कि पिता ध्यान दे, तो बैबून के बच्चे ज़्यादा तेज़ी से बढ़ते हैं और ज़्यादा तंदुरुस्त रहते हैं। प्रिंसटन विश्वविद्यालय की जीन आल्टमैन द्वारा किए गए इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि बैबूनों में नर की भूमिका मात्र लड़ाई करने और संभोग करने तक सीमित नहीं है। आल्टमैन ने कीनिया में किलिमंजारों पहाड़ों की तराई में स्थित अम्बोसेली राष्ट्रीय उद्यान में पीले बैबूनों (*पेपिओ सायनोसिफेलिस*) के अध्ययन के आधार पर ये निष्कर्ष *प्रोसीडिंग्स ऑफ नेशनल एकेडमी ऑफ साइन्सेज़* में प्रकाशित किए हैं।

ये प्राणी औसतन 40-40 के समूहों में रहते हैं। आम तौर पर मादा बैबून उसी समूह में रहती है जिसमें वह पैदा हुई थी मगर नर कई समूहों में भटकते देखे गए हैं। शोधकर्ताओं ने 1982 से 2002 के बीच 118 बैबूनों का अध्ययन किया। इनमें से 40 नर थे। हर युवा बैबून के डी.एन.ए. परीक्षण के द्वारा यह चिन्हित कर लिया गया था कि उसका पिता कौन-सा है।

इससे पहले शोधकर्ताओं का यही दल दर्शा चुका था कि वयस्क नर लड़ाइयों के दौरान अपने पुत्र के पक्ष में हस्तक्षेप करते हैं। तब माना गया था कि वे इस तरह के हस्तक्षेपों के ज़रिए अपनी ताकत का ही इज़हार करते हैं। मगर अब किए गए गए अध्ययन से पता चलता है कि बात इतनी सीधी-सादी नहीं है।

वर्तमान अध्ययन से पता चला है कि पिता अपनी संतानों के समूह में जितना अधिक समय बिताता है, संतानें उतनी ही जल्दी युवा और परिपक्व होती हैं। यानी पिता उनके साथ समय बिताए, तो वे जल्दी संतानोत्पत्ति के योग्य हो जाते हैं। शोधकर्ताओं का मत है कि पिता अपनी

संतानों के आसपास एक सुरक्षा चक्र का निर्माण कर देता है। इसके चलते वे फालतू की लड़ाइयों में नहीं उलझते और उन्हें खाने-पीने के लिए ज़्यादा समय मिलता है।

वैसे अध्ययन के दौरान देखा गया कि पिता के ध्यान देने का ज़्यादा फायदा नर संतानों को मिलता है। मादा संतानों को भी फायदा तो मिलता है मगर अपेक्षाकृत बहुत कम। कुल मिलाकर, पिता का संरक्षण मिलने पर उसकी नर संतानें जल्दी परिपक्व होकर ज़्यादा संतानें पैदा करने की स्थिति में होती हैं।

मगर अभी एक सवाल अनुत्तरित है। आज तक मात्र 10 प्रतिशत स्तनधारी प्रजातियों में पिता द्वारा देखभाल की बात देखी गई है। इसका कारण शायद यह हो सकता है कि पिता के लिए यह चिन्हित करना असंभव नहीं, तो कठिन ज़रूर है कि उसकी संतान कौन-सी है। पीले बैबून्स के संदर्भ में भी यह सवाल महत्वपूर्ण हो जाता है कि वे अपनी संतानों को कैसे पहचानते हैं। शोधकर्ता का अनुमान है कि वे शायद किसी गंध वगैरह का सहारा लेते होंगे। वैसे यह अपने आप में शोध का एक विषय है।

(स्रोत फीचर्स)